Poem by Indu Jain

(Translated by Ruth Vanita)

आह्वान

बहुत दिन हो गये
दीमक लगे फाटक से टिके
देखते देखते
ओस का लुढ़कना और सूखना
बीज का जलना
पत्तों का लाल से भूरा होना

बहुत दिन हो गये
हवा में द्वार ढूंढते ढूंढते
कुत्तों से चांद का पता चीन्हते
डोर से बंधी पंतग
हाथ में हिलती झण्डी बने बने
चीलों की चोंच से टपकती
वर्षा बूंद बीनते बीनते
बहुत दिन हो गये

अब तो आ जा
काले बादल के पीछे
मुस्काती सफेद रोशनी
उतर खिलखिलाती हुई
मेरी कमर से लिपट जा
हंसते हंसते दहका दे मुझे
तपा दे मॉस मज्जा
चिकना दे हड्डियां
लपट बना दे बालो की डोरियॉ
फुलझड़ी बरौनियॉ.

ओ अग्नि–स्फुट
मैं काले कोयले सी
ठण्डे कवच में पड़ी हूं
नखों से खोल ले
चमकीले दॉतों में दबाकर
लाल होंठ जोड़ ले
निगल कर उगल दे.

Invocation

Too long have I leant
on a worm eaten gate,
watching dew fall and dry
seed burn
red leaves turn brown,
too long searched for a door
in the winds,
located the moon
by the dogs' howling,
Too long have I been a kite
tied to a string
a flag waving in a hand
too long gathered
raindrops falling from eagles' beaks,

Come now,
while light
smiling behind black clouds,
descend, laughing playfully,
take me in your embrace—
laughing, set me on fire.
Heat flesh and marow
melt bone
make each hair a flame
each eyelash sparkler.

O bursting fire
I, like a black coal,
lie in a cold shell.
Open in with shining teeth.
Close your red lips.
Swallow and throw up again.

इन्दु जैन की कुछ कवितायें

धार

चाकू की तेजी
टटोलने से
मिलते हैं
खून और टीस

पानी की धार सी चमक
रही हूँ मैं
उँगली मत फिराना

अभी अभी सान पर रखी हूँ मैं

Edge

The knife is sharp
Testing it
brings
blood and a sharp string.

I am glinting
like the water's edge.
Don't feel it
with your finger.

I have just come off the wheel

मुट्ठियो में

मुट्ठियों में झांक कर देखा है –
वहाँ मुस्कान है
धड़कती थरथराती हुई
मुट्ठी खोल दूँ
तो हँसी का लाल तोता
उड़कर जा बैठे
तुम्हारे होंठो पर
और आकाश गाने लगे

तुम
मेरी मुट्ठी पर से हाथ
क्यों नहीं हटाते?

Firsts

I have peeped into my firsts
Smiles throb there
and quiver.
If I open my fist
the red parrot of laughter
will fly and sit
on your lips.
The sky will begin to sing.

Why do you not
take away your hand
from my fist?